हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय ~~सिमेस्टर~~ सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 10

* कामायनी में श्रद्धा की विशेषता पर प्रकाश डालें ?

श्रद्धा कामायनी की केन्द्रिय चरित्र है और उसकी केन्द्रियता रचना के नामकरण से ही स्पष्ट है। छायावादी कवियों ने प्रायः ऐसे नारी चरित्र गढ़े हैं जो क्षुद्रताओं और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एक व्यापक मानववादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

श्रद्धा की विशेषता :-

1.) सिर्फ बाह्य सौन्दर्य पर बल नहीं, बल्कि ज्यादा बल आंतरिक सौन्दर्य पर -
"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार, एकलम्बी काया उन्मुक्त,

2). वह अत्यन्त जिज्ञासु है, इस दौर में पहली बार नारियाँ घर से निकलन सामाजीक जीवन में प्रवेश कर रही थी।

3.) श्रद्धा की प्रेम - दृष्टि समर्पण, त्याग, ममता जैसे मूल्यों से निर्मित है जो छायावाद की विशिष्टता है।

4.) एक अर्थ में श्रद्धा गाँधीवादी भावनाओं, विशेषतः अहिंसा की प्रतीक है।

5.) श्रद्धा का व्यक्तित्व मानवतावादी है। वह सिर्फ परिवार या देश के बारे में नहीं सोचती बल्कि प्राणी मात्र के बारे में सोचती है।

6.) आनंदवाद या समरसतावाद का दर्शन भी श्रद्धा के माध्यम से ही व्यक्त हुआ है। मनु को समरसता की उपलब्धि कामायनी के अंत में हुई किन्तु श्रद्धा शुरू से ही उस जीवन दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें भौतिक सुखों या अतिबौधिकता के पीछे अंधी दौड़ लगाना उचित नहीं समझा जाता। अंत में इसी दृष्टिकोण से दोनों समरसता की स्थिति का आनंद महसूस करते हैं — समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था,

चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था।

प्रस्तुतकर्ता

दिनांक 16/12/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो०न०-8292227104।